

सम्पूर्णता वर्ष

साक्षीभाव और समभाव - 4

22.11.2014

1. स्वमान - मैं बाप समान विश्व कल्याणकारी हूँ।

- जैसे बाबा ने मेरा कल्याण किया है वेसे ही मुझे भी सारे संसार का कल्याण करना है...जो प्यार और सुख मुझे बाबा से मिला है, वही प्यार और सुख सबको देना है...।

2. योगाभ्यास -

अ. कभी विश्व के गोले को अपने हाथ में लेकर...तो कभी कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर सर्व आत्माओं को गति-सद्गति, मुक्ति-जीवनमुक्ति व शुभभावना-शुभकामना के वायब्रेशन्स देना...सब पर दयादृष्टि व कृपादृष्टि की वर्षा करना...।

ब. विश्व ग्लोब के ऊपर बैठकर ज्ञान सूर्य से शक्तियों की किरणें लेकर सारे संसार को देना...।

स. सारे दिन में 10 बार इस स्वमान का गहराई से अभ्यास करना कि मैं बाप समान विश्व कल्याणकारी हूँ...साथ ही बापदादा के साथ सारे विश्व का भ्रमण करते हुए सभी मनुष्यात्माओं की मनोकामनाएँ पूर्ण करना...।

3. धारणा - बेहद का समभाव

- बेहद का समभाव अर्थात् सर्व के लिये बाप समान कल्याण का भाव रखना, शुभ भाव रखना... सबके साथ समान व्यवहार करना...किसी के साथ मंसा, वाचा, कर्मणा भेदभाव ना करना...।

- समभाव के साथ-साथ सर्व के लिये श्रेष्ठ भाव रखना। इसके लिये सारे दिन में संबंध-संपर्क में आने वाली व सेवासाथियों की बुराईयों को ना देखते हुए वा उन्हें क्षमा करते हुए, उनकी विशेषताओं की महिमा करना।

4. चिंतन - एक साक्षीद्रष्टा और सर्व के लिये समभाव रखने वाले योगी का शब्दचित्र बनायें।

5. तपस्वियों प्रति - प्रिय तपस्वियों ! जैसे बाबा के मन में सर्व के लिए कल्याण की भावना है, वैसे ही हमारे मन में भी सर्व के लिये कल्याण की भावना हो। जैसे बाबा किसी का अकल्याण नहीं सोचते, वैसे ही हमें भी किसी का अकल्याण नहीं सोचना है। किसी की कमजोरी को देखने के बजाए रहमदिल बन कमजोर को भी शुभभावना का बल देना है। यही हम बाप समान विश्व कल्याणकारी आत्माओं का कर्तव्य है।

-ओमशांति-